

DPN 6312

Title :

जुजु जयप्रकाश मल्ल कालिक प्याखं

JUJU JAYA PRAKĀŚA -
MALLAKĀLIKA PYĀKHAM

Run. No. 7003

Cat. No.

Micro. No.

Subject NĀṬAKA

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 14 x 6.2

Folios 5

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / smoky

Beginning, colophon, post-colophon :

जय
नेपालेश्वर महाराजाधिराज श्रीश्रीजय प्रकाश मल्ल देवस
राज्य वृद्धि जुय माल ॥

नमो बलि मुखि पति दत्ति आख जिन वांछा मन ॥ ॥६॥

॥ १५ ॥ अथ राजकुमारानां वलीपुत्राणां प्रतिपत्तिः ॥

॥ हसनिहृदगुणहृद

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ २ ॥ ॥ सा सा उ ॥

हमन... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र... मन्त्र...

लोकजनि स्यात्कौजिद्वयधनाथनरवर्जितश्रम

साक्षात्ताननूया ॥ ॥ रुगन्धर्वनाजकुसामासीतला

वलीक्षरिण्डादिलाकपनिश्राउउरुनवाहिनी

मंजुसूत्रानेयायनूया ॥ ॥ रुग्णचैवत्राज्यमा

श्रीरत्नावली सरिरुडादिलाकपनिश्रीअनेत्र

धनमाहादवयापूजायायनमः ॥ ॥ जयजय

सुमन्त्रप, वस्त्रोद्योगविद्वान्, गणितविद्वान् साहसिक

वसनप्रसाक। जिपनि समना रथ पुन लपि
 आउता गगन सवन न्हिलखलपि चीन ॥ रु
 मदीय वरने न्हिलपा लया वरलकमल
 ससाक्षी गपलाम ॥ ॥ रुगन्धर्व नाजवसु
 की वलावली मलिरुडा दिलाकपनि आउथन
 खं विविध मया हाउं जानन्या ॥ ॥ रुगन्धर्व

पुकी वलावली दजिउख ॥ ॥ रुगन्धर्व नाजवसु
 सुति। उदी सुति गन्धर्व पत्नी वरुणा सेवा क
 लपी लपनि सवनल ॥ ॥ रुगन्धर्व नाजवसु
 सुति। सुती सुति गन्धर्व पत्नी वरुणा दजिउ
 ख ॥ ॥ रुगन्धर्व नाजवसु सुति दजिउख ॥ ॥
 रुगन्धर्व नाजवसु सुति दजिउख कलपाल

स०००॥ ॥ ह० अ० वि० म० नि० भ० त्र० स० वा० क० ल०
 वा० ले० या० च० त्र० धी० म० थ० ग० लि० आ० स० न० स० वि०
 का० दू० न० ॥ ॥ ह० म० नी० भ० त्र० द० जि० डा० ख० कं
 क० ध० व० न० ध० न० या० स० वि० का० दू० न० ॥ ॥ ह० म० नि०
 भ० त्र० द० जि० डा० ख० ॥ ॥ ह० म० नी० भ० त्र० ग० न०

हं वन्द्य पुण्य तलावली मन्त्रिण्डुगमस्य
 दादिलोकपति नमो लेश्वरमयाय
 ज्ञाधिनां ऊर्ध्वग्रीवस्य जययुक्ता मम
 लुप्यत सतादृष्टिंशु सताल ॥ ॥

गंगा गङ्गा दयानी नमो नमो
 नमि पुरुषोत्तम तारावती शिवशक्त्या
 वन्द्यते त्वं वन्दनीयं त्रयीपुत्रं त्रैलोक्यं
 तद्वन्द्यं वन्दनीयं त्रयीपुत्रं त्रैलोक्यं
 दास्यस्व मम साक्षात् वीर्यं तत्रैव
 गङ्गा नदी त्वं वन्दनीयं त्रैलोक्यं
 तद्वन्द्यं वन्दनीयं त्रैलोक्यं